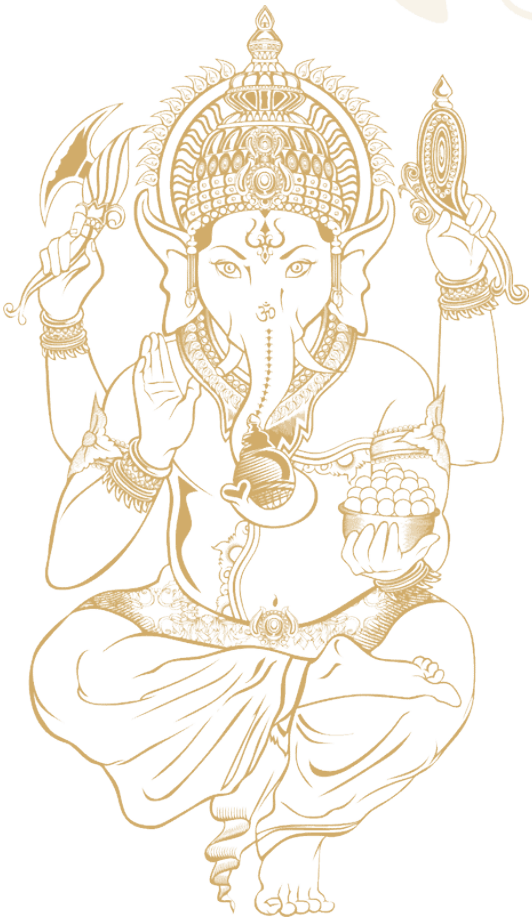

Mr.harsh Gajanan nagrikar

07 Jan 2004

12:35 AM

Yavatmal

Model: Web-MyKundli

Order No: 119214501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**6-07/01/2004**
दिवस	मंगळ–बुधवार
जन्म समय	**00:35:00 कला**
इष्ट	44:10:22 घटी
स्थान	**Yavatmal**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	20:24:00 उत्तर
रेखांश	78:08:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:17:28 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	00:17:32 कला
वेलान्तर	-00:05:30 कला
साम्पातिक वेल	07:20:22 कला
सूर्योदय	06:54:51 कला
सूर्यास्त	17:51:20 कला
दिनमान	10:56:30 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्याचे अंश	21:53:14 धनु
लग्नाचे अंश	24:52:52 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	कन्या – बुध
राशि–स्वामी	**मिथुन – बुध**
नक्षत्र–चरण	**आर्द्रा – 2**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	ऐन्द्र
करण	विष्टि
गण	मनुष्य
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मांजर
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	घ–घनश्याम
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1925	पौष	17
पंजाबी	संवत : 2060	पौष	23
बंगाली	सन् : 1410	पौष	22
तमिल	संवत : 2060	मारगाली	23
केरल	कोल्लम : 1179	धनु	23
नेपाली	संवत : 2060	पौष	23
चैत्रादी	संवत : 2060	पौष	शुक्ल 15
कार्तिकादी	संवत : 2060	पौष	शुक्ल 15

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 14
तिथि समाप्ति वेल _____: 19:16:01
जन्म तिथि _____: 15
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: मृगशिरा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 13:17:39 कला
जन्म योग _____: आर्द्रा
सूर्योदय समयी योग _____: ब्रह्म
योग समाप्ति वेल _____: 22:57:18 कला
जन्म योग _____: ऐन्द्र
सूर्योदय समयी करण _____: वणिज
करण समाप्ति वेल _____: 19:16:01 कला
जन्म करण _____: विष्टि
भयात _____: 28:13:24
भभोग _____: 66:07:04
भोग्य दशा वेल _____: राहु 10 वर्ष 4 मा 5 दि

घात चक्र

मास _____: आषाढ़
तिथि _____: 2-7-12
दिवस _____: सोमवार
नक्षत्र _____: स्वाति
योग _____: परिघ
करण _____: कौलव
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: उंदीर
लग्न _____: कर्क
रवि _____: मीन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगळ _____: मेष
बुध _____: मकर
गुरु _____: वृषभ
शुक्र _____: मिथुन
शनि _____: कुम्भ
राहु _____: कर्क

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

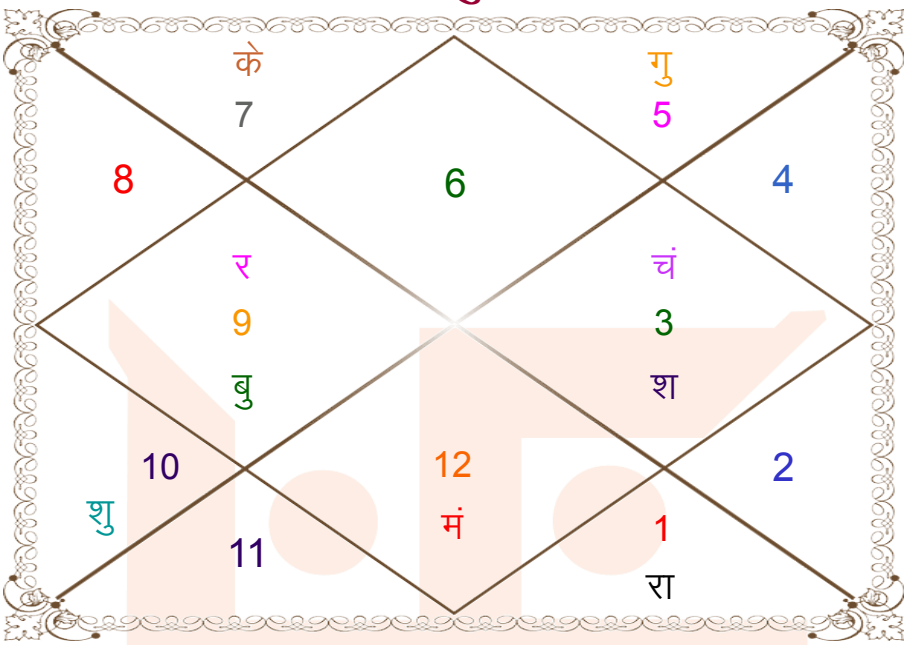

चन्द्र कुंडली

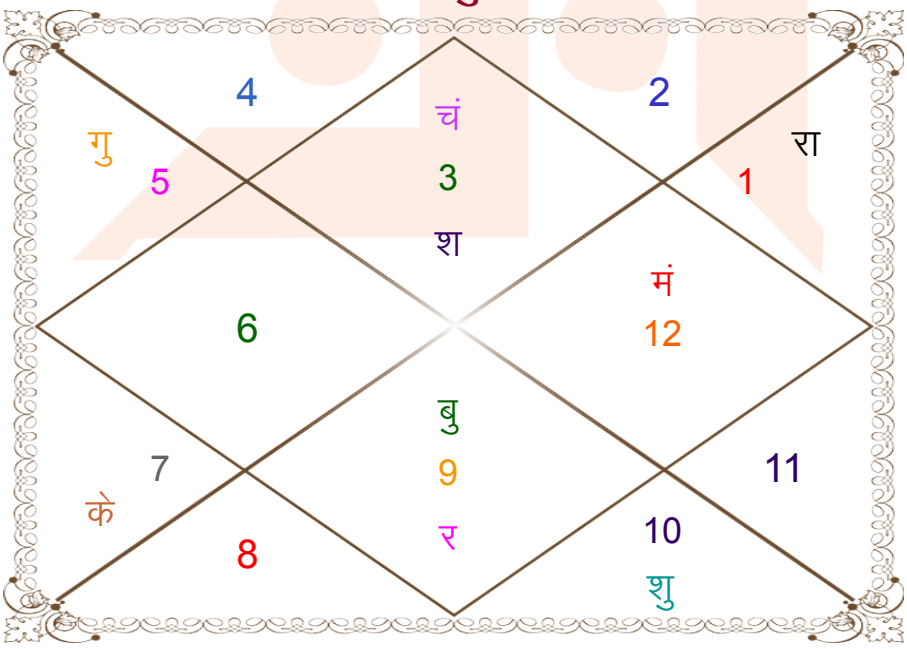

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

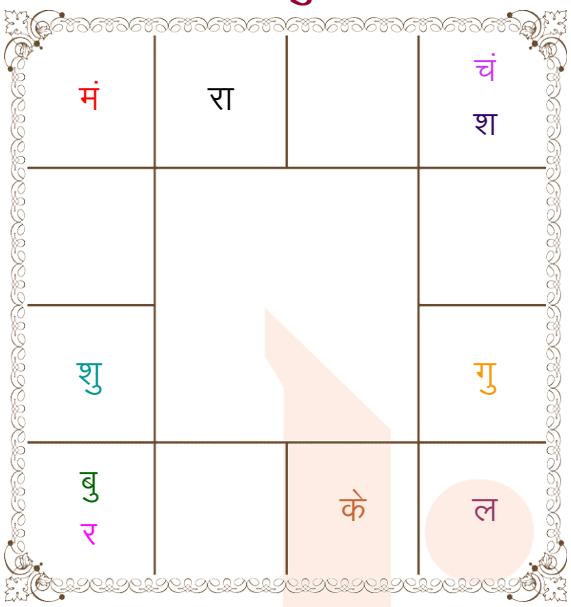

लग्न कुंडली

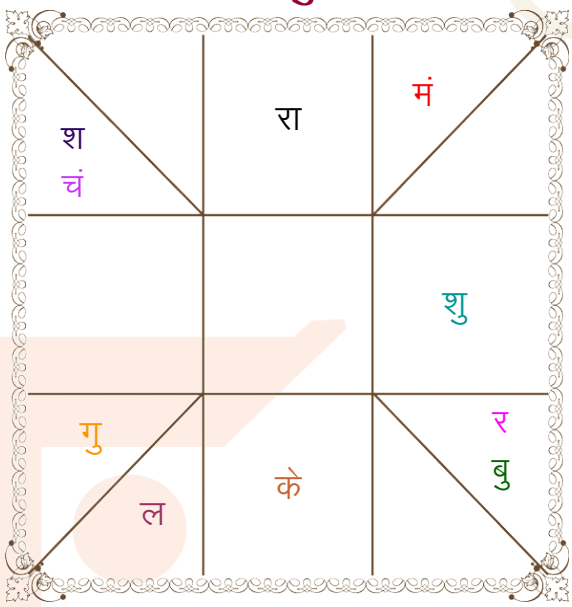

विंशोत्तरी

राहु 10वर्ष 4मा 5दि

राहु

07/01/2004

14/05/2116

राहु	13/05/2014
गुरु	13/05/2030
शनि	13/05/2049
बुध	13/05/2066
केतु	13/05/2073
शुक्र	13/05/2093
रवि	13/05/2099
चन्द्र	14/05/2109
मंगळ	14/05/2116

योगिनी

मंगळा 0वर्ष 6मा 27दि

सिद्धा

04/08/2024

04/08/2031

सिद्धा	14/12/2025
संकटा	05/07/2027
मंगळा	14/09/2027
पिंगला	03/02/2028
धान्या	03/09/2028
भ्रामरी	14/06/2029
भद्रिका	04/06/2030
उल्का	04/08/2031

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	24:52:52	335:15:50	चित्रा	1	14	बुध	मंगळ	राहु	–––
सूर्य			धनु	21:53:14	01:01:08	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			मिथु	12:20:06	12:05:10	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	मित्र राशि
मंगळ			मीन	18:47:39	00:36:50	रेवती	1	27	गुरु	बुध	केतु	मित्र राशि
बुध			धनु	02:21:48	00:01:59	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
गुरु	व		सिंह	24:58:53	00:00:32	पू.फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	मित्र राशि
शुक्र			मक	26:24:54	01:13:28	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगळ	गुरु	मित्र राशि
शनि	व		मिथु	15:21:55	00:04:54	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	मित्र राशि
राहु	व		मेष	25:06:26	00:09:08	भरणी	4	2	मंगळ	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	25:06:26	00:09:08	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	सम राशि
हर्ष			कुंभ	06:24:24	00:02:41	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगळ	चंद्र	–––
नेप			मक	17:58:29	00:02:05	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	–––
प्लूटो			वृश्चि	26:47:38	00:02:06	ज्येष्ठा	4	18	मंगळ	बुध	गुरु	–––
दशम भाव			मिथु	24:38:27	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	बुध	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:54:36

लग्न–चलित

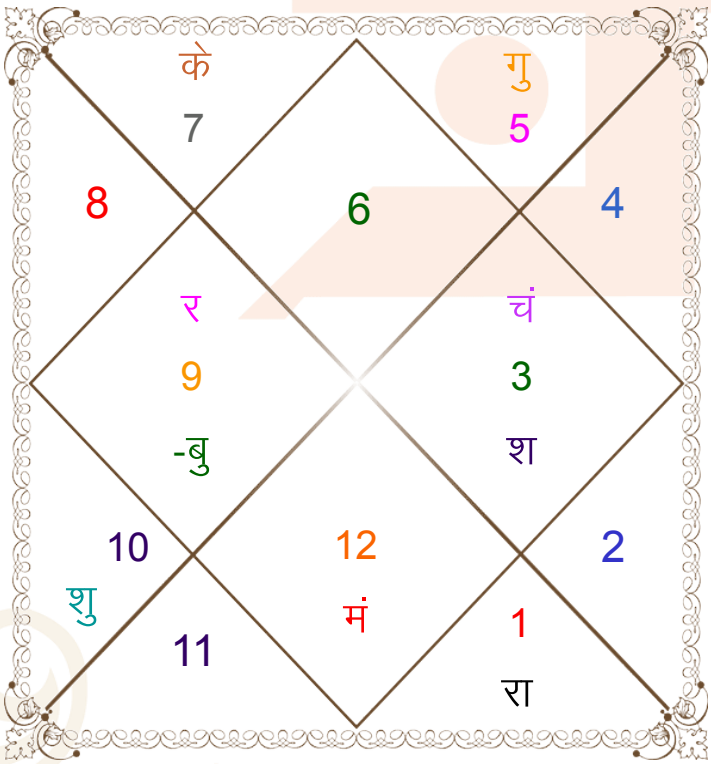

चन्द्र कुंडली

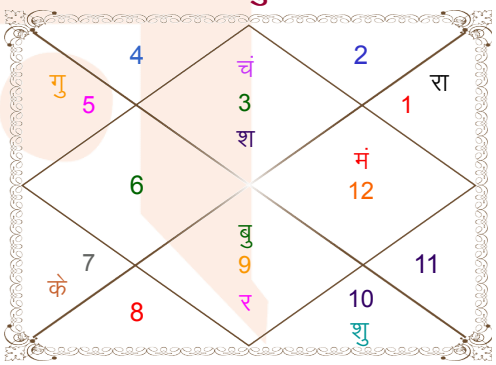

नवमांश कुंडली

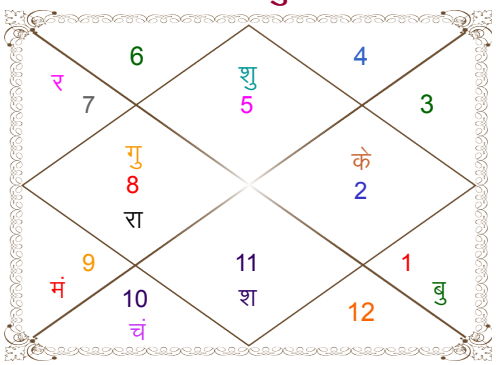

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	09:50:27	कन्या	24:52:52
2	तुला	09:50:27	तुला	24:48:03
3	वृश्चिक	09:45:39	वृश्चिक	24:43:15
4	धनु	09:40:51	धनु	24:38:27
5	मकर	09:40:51	मकर	24:43:15
6	कुम्भ	09:45:39	कुम्भ	24:48:03
7	मीन	09:50:27	मीन	24:52:52
8	मेष	09:50:27	मेष	24:48:03
9	वृषभ	09:45:39	वृषभ	24:43:15
10	मिथुन	09:40:51	मिथुन	24:38:27
11	कर्क	09:40:51	कर्क	24:43:15
12	सिंह	09:45:39	सिंह	24:48:03

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	24:52:52
2	तुला	24:13:35
3	वृश्चिक	24:12:06
4	धनु	24:38:27
5	मकर	25:39:50
6	कुम्भ	26:20:57
7	मीन	24:52:52
8	मेष	24:13:35
9	वृषभ	24:12:06
10	मिथुन	24:38:27
11	कर्क	25:39:50
12	सिंह	26:20:57

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा
शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा

चलित कुंडली

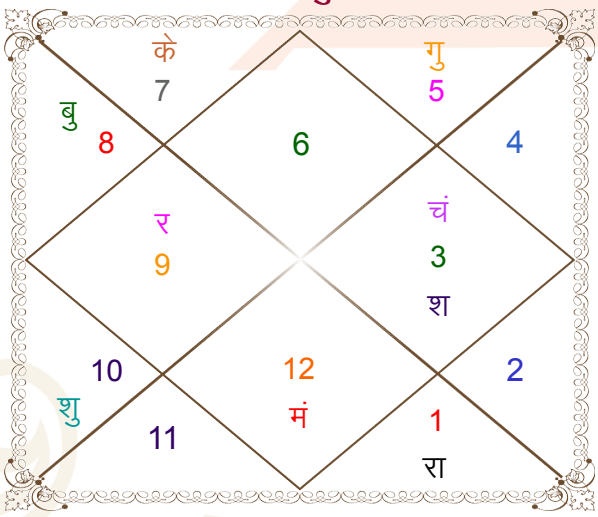

भाव कुंडली

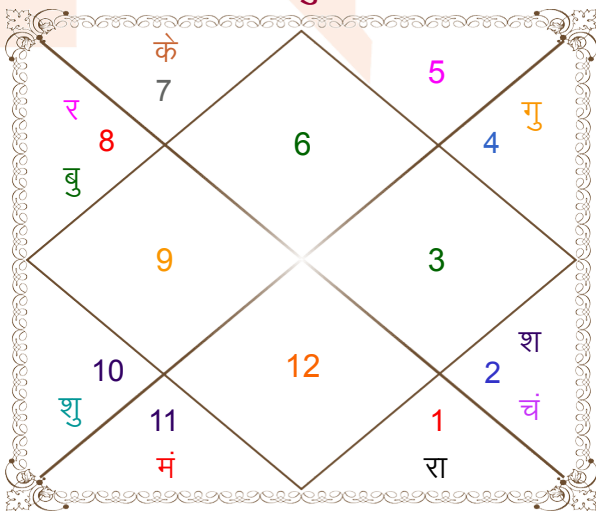

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : राहु 10 वर्ष 4 महिना 5 दिवस

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
07/01/2004		13/05/2014		13/05/2030		13/05/2049		13/05/2066	
13/05/2014		13/05/2030		13/05/2049		13/05/2066		13/05/2073	
	00/00/0000	गुरु	30/06/2016	शनि	16/05/2033	बुध	09/10/2051	केतु	09/10/2066
	07/01/2004	शनि	12/01/2019	बुध	24/01/2036	केतु	06/10/2052	शुक्र	09/12/2067
शनि	24/04/2004	बुध	18/04/2021	केतु	04/03/2037	शुक्र	07/08/2055	सूर्य	15/04/2068
बुध	12/11/2006	केतु	25/03/2022	शुक्र	03/05/2040	सूर्य	12/06/2056	चंद्र	14/11/2068
केतु	30/11/2007	शुक्र	23/11/2024	सूर्य	15/04/2041	चंद्र	11/11/2057	मंगळ	12/04/2069
शुक्र	30/11/2010	सूर्य	12/09/2025	चंद्र	15/11/2042	मंगळ	09/11/2058	राहु	01/05/2070
सूर्य	25/10/2011	चंद्र	12/01/2027	मंगळ	25/12/2043	राहु	28/05/2061	गुरु	07/04/2071
चंद्र	25/04/2013	मंगळ	18/12/2027	राहु	31/10/2046	गुरु	03/09/2063	शनि	16/05/2072
मंगळ	13/05/2014	राहु	13/05/2030	गुरु	13/05/2049	शनि	13/05/2066	बुध	13/05/2073

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
13/05/2073		13/05/2093		13/05/2099		14/05/2109		14/05/2116	
13/05/2093		13/05/2099		14/05/2109		14/05/2116		00/00/0000	
शुक्र	11/09/2076	सूर्य	30/08/2093	चंद्र	14/03/2100	मंगळ	10/10/2109	राहु	25/01/2119
सूर्य	12/09/2077	चंद्र	01/03/2094	मंगळ	13/10/2100	राहु	28/10/2110	गुरु	19/06/2121
चंद्र	13/05/2079	मंगळ	07/07/2094	राहु	14/04/2102	गुरु	04/10/2111	शनि	08/01/2124
मंगळ	12/07/2080	राहु	01/06/2095	गुरु	14/08/2103	शनि	12/11/2112		00/00/0000
राहु	13/07/2083	गुरु	19/03/2096	शनि	14/03/2105	बुध	09/11/2113		00/00/0000
गुरु	13/03/2086	शनि	01/03/2097	बुध	13/08/2106	केतु	08/04/2114		00/00/0000
शनि	13/05/2089	बुध	05/01/2098	केतु	14/03/2107	शुक्र	08/06/2115		00/00/0000
बुध	13/03/2092	केतु	13/05/2098	शुक्र	12/11/2108	सूर्य	14/10/2115		00/00/0000
केतु	13/05/2093	शुक्र	13/05/2099	सूर्य	14/05/2109	चंद्र	14/05/2116		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल राहु 10 वर्ष 3 मा 24 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि	
23/11/2024		12/09/2025		12/01/2027		18/12/2027		13/05/2030	
12/09/2025		12/01/2027		18/12/2027		13/05/2030		16/05/2033	
सूर्य	08/12/2024	चंद्र	22/10/2025	मंगळ	31/01/2027	राहु	28/04/2028	शनि	03/11/2030
चंद्र	01/01/2025	मंगळ	20/11/2025	राहु	24/03/2027	गुरु	23/08/2028	बुध	08/04/2031
मंगळ	18/01/2025	राहु	01/02/2026	गुरु	08/05/2027	शनि	09/01/2029	केतु	11/06/2031
राहु	03/03/2025	गुरु	07/04/2026	शनि	01/07/2027	बुध	13/05/2029	शुक्र	11/12/2031
गुरु	11/04/2025	शनि	23/06/2026	बुध	18/08/2027	केतु	03/07/2029	सूर्य	04/02/2032
शनि	27/05/2025	बुध	31/08/2026	केतु	07/09/2027	शुक्र	26/11/2029	चंद्र	05/05/2032
बुध	08/07/2025	केतु	28/09/2026	शुक्र	03/11/2027	सूर्य	09/01/2030	मंगळ	09/07/2032
केतु	25/07/2025	शुक्र	18/12/2026	सूर्य	20/11/2027	चंद्र	23/03/2030	राहु	20/12/2032
शुक्र	12/09/2025	सूर्य	12/01/2027	चंद्र	18/12/2027	मंगळ	13/05/2030	गुरु	16/05/2033

शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
16/05/2033		24/01/2036		04/03/2037		03/05/2040		15/04/2041	
24/01/2036		04/03/2037		03/05/2040		15/04/2041		15/11/2042	
बुध	02/10/2033	केतु	17/02/2036	शुक्र	13/09/2037	सूर्य	21/05/2040	चंद्र	03/06/2041
केतु	29/11/2033	शुक्र	24/04/2036	सूर्य	09/11/2037	चंद्र	19/06/2040	मंगळ	06/07/2041
शुक्र	11/05/2034	सूर्य	14/05/2036	चंद्र	14/02/2038	मंगळ	09/07/2040	राहु	01/10/2041
सूर्य	30/06/2034	चंद्र	17/06/2036	मंगळ	22/04/2038	राहु	30/08/2040	गुरु	17/12/2041
चंद्र	19/09/2034	मंगळ	11/07/2036	राहु	13/10/2038	गुरु	15/10/2040	शनि	19/03/2042
मंगळ	16/11/2034	राहु	09/09/2036	गुरु	16/03/2039	शनि	09/12/2040	बुध	09/06/2042
राहु	12/04/2035	गुरु	02/11/2036	शनि	15/09/2039	बुध	27/01/2041	केतु	12/07/2042
गुरु	21/08/2035	शनि	05/01/2037	बुध	26/02/2040	केतु	17/02/2041	शुक्र	17/10/2042
शनि	24/01/2036	बुध	04/03/2037	केतु	03/05/2040	शुक्र	15/04/2041	सूर्य	15/11/2042

शनि - मंगळ		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु	
15/11/2042		25/12/2043		31/10/2046		13/05/2049		09/10/2051	
25/12/2043		31/10/2046		13/05/2049		09/10/2051		06/10/2052	
मंगळ	08/12/2042	राहु	29/05/2044	गुरु	03/03/2047	बुध	14/09/2049	केतु	31/10/2051
राहु	07/02/2043	गुरु	15/10/2044	शनि	27/07/2047	केतु	05/11/2049	शुक्र	30/12/2051
गुरु	02/04/2043	शनि	28/03/2045	बुध	06/12/2047	शुक्र	31/03/2050	सूर्य	17/01/2052
शनि	05/06/2043	बुध	23/08/2045	केतु	28/01/2048	सूर्य	14/05/2050	चंद्र	16/02/2052
बुध	02/08/2043	केतु	23/10/2045	शुक्र	01/07/2048	चंद्र	27/07/2050	मंगळ	08/03/2052
केतु	25/08/2043	शुक्र	14/04/2046	सूर्य	16/08/2048	मंगळ	16/09/2050	राहु	02/05/2052
शुक्र	01/11/2043	सूर्य	05/06/2046	चंद्र	01/11/2048	राहु	26/01/2051	गुरु	19/06/2052
सूर्य	21/11/2043	चंद्र	31/08/2046	मंगळ	25/12/2048	गुरु	23/05/2051	शनि	15/08/2052
चंद्र	25/12/2043	मंगळ	31/10/2046	राहु	13/05/2049	शनि	09/10/2051	बुध	06/10/2052

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	7
भाग्यांक	5
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 5
शत्रु अंक	4, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिवस	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, कुम्भ
मित्र लग्न	धनु, वृषभ, कर्क
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, ओपल
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सकाली के बाद
दान पदार्थ	हत्ती दाँत, काफुर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	100%	सन्तति सुख, भाग्योदय, धन
लहसुनिया	केतु	73%	धन, सन्तति सुख
नीलम	शनि	72%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	67%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
पुष्कराज	गुरु	25%	व्यय, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	22%	ग्रह कलेश, व्यय
गोमेद	राहु	16%	दुर्घटना, दाम्पत्य कष्ट
पोवले	मंगळ	0%	दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना, पराक्रम हानि

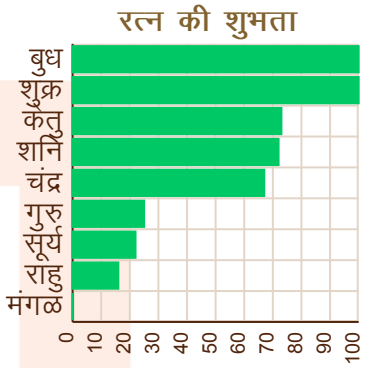

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	13/05/2014	0%	55%	0%	100%	25%	100%	78%	41%	61%
गुरु	13/05/2030	34%	73%	3%	94%	50%	89%	72%	16%	73%
शनि	13/05/2049	0%	55%	0%	100%	25%	100%	84%	28%	61%
बुध	13/05/2066	34%	55%	0%	100%	25%	100%	72%	16%	73%
केतु	13/05/2073	0%	55%	3%	100%	25%	100%	59%	0%	86%
शुक्र	13/05/2093	0%	55%	0%	100%	25%	100%	78%	28%	80%
सूर्य	13/05/2099	47%	73%	3%	100%	38%	89%	59%	0%	61%
चंद्र	14/05/2109	34%	80%	0%	100%	25%	100%	72%	0%	61%
मंगळ	14/05/2116	34%	73%	16%	94%	38%	100%	72%	0%	80%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षे मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	07/01/2004-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
चतुर्थस्थान चरण	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
अष्टमस्थान चरण	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
चतुर्थस्थान चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
अष्टमस्थान चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
चतुर्थस्थान चरण	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
अष्टमस्थान चरण	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	शुभ	व्यावसाय
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	सम	अल्प बचत
चतुर्थस्थान चरण	सम	स्वास्थ्य
अष्टमस्थान चरण	शुभ	सन्तति सुख
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	भाग्योदय

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म समया वर मंगल स्थिति सप्तम भावात आहे, अतः आपण एक मांगलिक पुरूष आहे तसेच तुमचा मंगल दोष भंग नाय होतात, या मुळे यांचा प्रभाव पासून तुमची बायको चा स्वास्थ्य सामान्य रहणार. तसेच स्वभावात उष्णता रहणारी कधीं–मधीं सम्बधातील मतभेद उत्पन्न होउ सकतात, पण स्थिति काही थोड़े वेळ रहणारी तसेच दांपत्य जीवनावर यांचा काही विशेष प्रभाव नाय होणार. आपण कधीं–मधीं उष्णता किंवा पित्त पासून अजारी होउ सकतो, मंगल प्रभाव पासून तुमचा विवाह कार्य काही उसीर होणार तसेच विवाह चे गोष्ठ मधे काही अडचणे पण येणारी नंतर सफळता अवश्य मिळेल दापंत्य जीवन सामान्य सुखी होणार. सप्तम भावात मंगल प्रभावातून तुमचा स्वास्थ्य मध्यम रहणार, दशम भाव वर मंगल ची दृष्टि पासून कार्य क्षेत्र मधे तुम्हाला परिश्रम आणि पराक्रम पासून सफळता भेंटणारी तसेच समाजातील सामान्य मान–सम्मान प्राप्त करणारे, लग्न वर दृष्टि पासून स्वभावात काही तेजसविता होइल कधीं–मधीं मानसिक अशांति पण होउ सकतो. द्वितीय भाव वर मंगल दृष्टि पासून कार्य क्षेत्र मधे आणि परिवारिक सुख शांति किंवा समृद्धि सामान्य रहणारी, काही मतभेद पण कुटुम्बातील होउ सकतात, ज्या मुळे शांति प्रभावित होणारी. अतः आपले दांपत्य जीवनाला जास्ती सुखी ठेवाय साठी आणि संपन्न कराय साठी तुम्हाला इतर मांगळिक शिवाय कन्या पासून विवाह कराय ला पाहिजे परस्पर मंगल दोष भंग साठी कन्या ची कुंडली मधे मांगलिक भाव किंवा प्रथम् चतुर्थ, सप्तम, अष्टम् आणि द्वादश भावात शनि तसेच राहु सारख्या पापी ग्रह होणार पाहिजे. असाक न तुमचे सुख सौभाग्य आणि ऐश्वर्य मधे वृद्धि होणार तसेच सुख शांति युद्ध तुमचा दांपत्य जीवन व्यतीत होणार आणि परस्पर सम्बंधातील मधुरता आणि सहयोग ची भावना रहणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- रवि पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।

आपकी कुडली में रवि और बुध के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान, अध्ययनशील, सुन्दर, रतिकुशल, भोगी, मर्मज्ञ, नेत्र चिकित्सक, अच्छा वक्ता एवं अच्छा अन्तर्ज्ञान वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, घ्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी ,न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(13/05/2014 - 13/05/2030)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 13/05/2014 को शुरू और 13/05/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव, हानि और बाधा, फिजूलखर्च, व्यय, पारिवारिक अलगाव, सुदूर स्थानों की यात्रा, धोखाधड़ी और भाग्यहीनता, कैद, अस्पताल में भर्ती होना, धोखा, घोटाला, कलंक तथा गुप्त शोक, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति द्वादश भाव में तथा दृष्टि चतुर्थ, षष्ठ तथा अष्टम भाव पर है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। यह 16 साल की अवधि आपके लिए उतार-चढ़ाव से युक्त होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु की दृष्टि द्वादश भाव से षष्ठ भाव अर्थात शत्रु भाव या रोग भाव पर होने के फलस्वरूप आपको न तो कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या होने की संभावना है और न ही कोई बड़ी दुर्घटना जो आपको शारीरिक क्षति पहुँचा सके। आपका जीवन नियमित रहेगा।

अर्थ संपत्ति :

गुरु की अष्टम भाव अर्थात अचानक उन्नति के भाव और मांगलिक कार्य के भाव (चतुर्थ और षष्ठ भावों के अतिरिक्त) तथा चतुर्थ भाव अर्थात् सुख स्थान पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको चल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का अवसर प्राप्त होगा तथा आप भोग-विलास की वस्तुओं पर खर्च करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव को शक्तिशाली बना रहा है। यह हानि और खर्च तथा अलगाव आदि का भाव है। इसके फलस्वरूप आप जो भी व्यवसाय शुरू करेंगे आपको एक या अनेक कठिनाइयों या समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपको अंतिम कदम सावधानीपूर्वक लेने की सलाह दी जाती है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण होगा तथा आपके जीवन साथी आपके साथ पूर्ण सहयोग करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे। परिवार में कुछ उदासी हो सकती है। आप अपने सुखी परिवार का आनन्द उठाएँगे।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(23/11/2024 - 12/09/2025)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/05/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/11/2024 को प्रारंभ होकर 12/09/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपका घर सुखी रहेगा, फिर भी आप थोड़ा सावधान रहें और घर में ज्यादा कठोर व्यवहार न करें, अन्यथा संबंधों में कटुता आ सकती है। मेहमानों से घर में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। मित्रों की संख्या पर्याप्त होगी। भूमि क्रय कर सकते हैं। उत्तम आवास और वाहन सुख रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। प्रसिद्धि, प्रोन्नति और कार्यों में सफलता का संकेत है। पिता और उच्चपदस्थ व्यक्तियों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकता है। माता के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, सफल रहेंगी, जीवन में प्रगति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, कार्यों की समाप्ति, प्रसन्नता, उत्तम स्वास्थ्य और शत्रुओं के नाश का संकेत है।

आपकी संतान को पढ़ाई में अधिक परिश्रम करना चाहिए। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन होगा, उच्चपद मिलेगा, सरकार से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अधिक उत्तेजना और अत्यधिक परिश्रम से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- गुरु - चन्द्र
(12/09/2025 - 12/01/2027)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/05/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 12/09/2025 को आरंभ होकर 12/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। शिक्षा में सफलता मिलेगी। धन और सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता से संबंध उत्तम रहेंगे। कार्य की प्रशंसा होगी। सुख-साधन और वाहन उपलब्ध रहेंगे। प्रसन्नचित्त रहेंगे। परिवार में वातावरण हंसी-खुशी का रहेगा।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा; सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके

पिता का धनार्जन उत्तम होगा, पारिवारिक जीवन उत्तम होगा, स्वादिष्ट भोजन उपलब्ध होगा। माता को साझेदार से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए विरासत से अचानक लाभ, अध्यात्म में रुचि, उत्तम स्वास्थ्य, अनावश्यक खर्चो और प्रगति में बाधा का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो मातहतों से संबंध उत्तम रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता सफल होंगे। व्यापारियों को वर्तमान साधनों से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

अंर्तदशा :- गुरु - मंगल
(12/01/2027 - 18/12/2027)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/05/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/01/2027 को प्रारंभ होकर वद 18/12/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा; धनी और शक्तिशाली बनेंगे। व्यापार में लाभ होगा। पारिवारिक जीवन में मामूली तनाव हो सकता है। कार्यक्षेत्र में वांछित सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे, सफलता ओर प्रसन्नता मिलेंगी, शिक्षा उत्तम होगी। कटुवचन बोलने से बचें। आप बुद्धिमान और कल्पनाशील हैं। स्वयं के परिश्रम से धनी बन सकते हैं।

आपके जीवनसाथी का आत्म-विश्वास बढ़ेगा। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता को अचल संपत्ति से आय होगी। आपके भाई-बहनों के लिए कार्यक्षेत्र में प्रगति, निवेश से लाभ, यात्रा, सफलता और उत्साह के कारण प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजयी होगी; साख उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो स्वस्थ और धनी होंगे; भाई-बहनों से संबंध उत्तम होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम रहेगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे, आय अच्छी होगी, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- गुरु - राहु
(18/12/2027 - 13/05/2030)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/05/2014 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 18/12/2027 को प्रारंभ होकर 13/05/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आपको जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से धनलाभ होगा। सट्टेबाजी आदि से अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। अध्यात्म में मन लगेगा। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। भौतिक सुख-साधन प्राप्त करने की इच्छा पूर्ण होगी। प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे; उनसे लाभ होगा। धन की कमी से बचने के लिए धन का सुनियोजित उपयोग आवश्यक है।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ होगा और संतान से सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय, कार्यक्षेत्र में सफलता, धन, लंबी यात्रा और समाजसेवा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, घर में सुख मिलेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को हर प्रकार से धनलाभ होगा।

मामूली व्याधिओं को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए नीले वस्त्र, उड़द और सतनजा दान दें।